# श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिर

## 'सोनागिर में सोना सदा बरसता है।'

सोनागिर अर्थात् सोने के पहाड़। मध्य प्रदेश के दतिया जिले में स्थित सिद्धक्षेत्र सोनागिर अपनी स्वर्णिम आभा और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रसिद्ध जैन तीर्थ है। सोनागिर के पर्वत पर विराजमान जिनमंदिर बहुत प्राचीन काल से ही आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। जैनत्व की आस्था का गढ़ माने जाने वाले बुंदेलखण्ड क्षेत्र में सोनागिर तीर्थ मस्तक पर मुकुट के रूप में शोभायमान हो रहा है।

**स्थिति–** सोनागिर क्षेत्र म. प्र. के दतिया जिले में दतिया से 15 किमी. झांसी से 45 किमी. और ग्वालियर से 75 किमी. की दूरी पर स्थित है। मेन हाईवे लाइन पर स्थित होने के कारण ट्रेन की अच्छी सुविधा उपलब्ध है। रेलवे स्टेशन सोनागिर के नाम से ही है। स्टेशन से मात्र 45 किमी. पर ही मंदिर स्थित है।

**क्षेत्र महात्म्य–** सोनागिर क्षेत्र का महात्म्य भगवान चन्द्रप्रभु के समय से जुड़ा हुआ है। आठवें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु का समवशरण यहाँ 17 बार आया। मुख्य मंदिर भी भगवान चन्द्रप्रभु का ही है। यह सिद्धभूमि भी है।

नंगकुमार, अनंग कुमार, चिन्त्यगति, पूर्णचन्द्र, अशोकसेन, श्रीदत्ता, स्वर्णभद्र आदि अनेक महापुरुषों ने यहाँ तपस्या करके मोक्षलक्ष्मी का वरण किया। साढ़े पाँच करोड़ मुनियों की निर्वाण स्थली है सोनागिर। आचार्य शुभचन्द्र देव और भतृहरि ने भी यहीं रहकर अपनी साधना और लेखन कार्य किया।

**दर्शन–** पर्वत पर कुल 77 व नीचे ग्राम में 26 मंदिर हैं। पर्वत पर बने 77 मंदिरों पर क्रमांक अंकित किये गये हैं जिससे भक्तगण क्रम से मंदिरों के दर्शन करते हुए शिखर पर स्थित 57 नं. मंदिर में पहुँचते हैं। यह यहाँ का मुख्य मंदिर है। भगवान चन्द्रप्रभु की अत्यन्त मनोहारी 11 फुट उत्तुंग भव्य चित्राकर्षण प्रतिमा विराजमान है। भगवान शीतलनाथ और पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं भी विराजमान हैं।

भगवान चन्द्रप्रभु की प्रतिमा के विषय में अनेक श्रद्धालुओं का अनुभव है कि एकटक देखने से प्रतिमा के रंग बदलते हुए दिखाई देते हैं। श्रद्धा-भक्ति पूर्वक आराधना करने से मनोवांछित फल भी प्राप्ति होती है। ऊपर ही नंग-अनंग कुमार आदि मुनियों की भव्य प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं तथा 43 फुट उत्तुंग भव्य मानस्तम्भ भी निर्मित है। समवशरण की रचना और पर्वत पर नवीन निर्माणों में नन्दीश्वर दीप के दर्शन भी उल्लेखनीय हैं। मंदिर क्रमांक 60 पिसनहारी मंदिर के नाम से जाना जाता है। कहते हैं कि एक गरीब बुढ़िया ने हाथ की चक्की पर आटा पीस-पीस कर पैसे इकट्ठे करके इन मंदिरों का निर्माण कराया। धन्य है ऐसी श्रद्धा भक्ति।

अन्य सभी मंदिर भी अति प्राचीन एवं दर्शनीय हैं तथा मूर्तियों का शिल्प भी अद्‌भुत है। नीचे ग्राम के मंदिर भी अति प्राचीन तथा दर्शनीय हैं। कुन्दकुन्द नगर में भगवान बाहुबली की भव्य उत्तुंग प्रतिमा एवं मंदिर दर्शनीय है। अन्य मंदिरों में भट्टारक कोठी में मूलनायक भगवान शंतिनाथ, बीसपंथी कोठी कांच वाला मंदिर में मूलनायक भगवान अनन्तनाथ, तेरापंथी कोठी में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ त्यागी व्रती आश्रम में मूलनायक भगवान चन्द्रप्रभु, दिल्ली वाली धर्मशाला में मूलनायक भगवान चन्द्रप्रभु विराजमान हैं।

**वार्षिक मेला–** क्षेत्र का वार्षिक मेला होली पर लगता है जो फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी से चैत बदी पंचमी तक एक सप्ताह का रहता है। क्षेत्र पर आवास के लिए अनेक धर्मशालाएं तथा सुविधायुक्त कमरे उपलब्ध हैं।

भगवान चन्द्रप्रभु की स्वर्णिम आभा से युक्त स्वर्णगिरि या सोनागिर क्षेत्र के भावपूर्वक वन्दना करने से विघ्नों का नाश व कर्मों का क्षय होता है। ऐसी पवित्र सिद्ध भूमि को शत्-शत् नमन।

**क्षेत्र सम्पर्क–** 07522-262222, 262223

क्षेत्र का पता- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, सोनागिर, जिला दतिया (म. प्र.)-475685

**-नवनीत जैन**